Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
October to December 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LII (52), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

कुमार विश्वास की कविताएं : सांस्कृतिक विरासत और संरक्षण का जीवंत दस्तावेज

सरिता सैनी* डॉ. निर्मला राव**

* शोधार्थी (हिंदी) संगम विश्वविद्यालय, भीलवाड़ा (राज.) भारत
** सह-आचार्य, संगम विश्वविद्यालय, भीलवाड़ा (राज.) भारत

शोध सारांश – कुमार विश्वास समकालीन हिंदी कविताओं में अपना विशिष्ट महत्त्व रखते हैं। समकालीन कविताएं मात्र साहित्यिक अभिव्यक्ति ना होकर जन संवाद के माध्यम से सांस्कृतिक चेतना और सामाजिक सरोकारों का सशक्त माध्यम रही है। कुमार विश्वास की कविताएं भी सांस्कृतिक विरासत, राष्ट्रीय चेतना, लोक संवेदना, मानवीय मूल्य, भारतीय परंपरा व आधुनिकता की संतुलित व समन्वित अभिव्यक्ति रही है। कुमार विश्वास की कविताएं न सिर्फ अतीत का गुणगान करती है, बल्कि सांस्कृतिक विरासत व संस्कृति को समकालीन जीवन से जोड़कर उसे जीवंत बना देती है। वे कविताओं को केवल सौंदर्य बोध तक सीमित न रखकर सांस्कृतिक चेतना का माध्यम बना देते हैं। जैसे भाषा संस्कृति के संरक्षण की वाहक होती है, वैसे ही कुमार विश्वास की भाषा भी सहज, संप्रेषणीय और भावनात्मक लोक संस्कृति की वाहक है।

शब्द कुंजी – कुमार विश्वास, साहित्यिक अभिव्यक्ति, सांस्कृतिक चेतना, सांस्कृतिक विरासत, भारतीय परंपरा, संरक्षण।

प्रस्तावना – सांस्कृतिक विरासत वह धरोहर है, जिसमें हमारे समाज व राष्ट्र के जीवन- मूल्य, हमारी आस्थाएं, परंपराएं, विश्वास, साहित्य, कला, भाषा और जीवन-दर्शन सभी शामिल है। यह अमूल्य निधि न केवल हमारे अतीत की स्मृति है, अपितु हमारी वर्तमान की चेतना और हमारे भविष्य को दिशा प्रदान करने वाली भी है। सांस्कृतिक विरासत हमारी पहचान को सुदृढ़ करती है। उसे अपने मूल आधार से जोड़ती है और हमें नैतिकता, मानवता व सद्भाव के मार्ग पर अग्रसर होने की प्रेरणा देती है। सांस्कृतिक विरासत राष्ट्र की आत्मा के समान है, जिसका संरक्षण और संवर्धन प्रत्येक पीढ़ी का दायित्व होता है।

भारतीय साहित्य हमेशा से ही सांस्कृतिक विरासत को अपने में संजोए हुए है। वेदों से लेकर वर्तमान भारतीय साहित्य सांस्कृतिक चेतना, परंपरा, लोक-संस्कृति, ऐतिहासिक गौरव व मानवीय मूल्यों को अपने में समेटे हुए है। हिंदी साहित्य में आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक का साहित्य हमारी लोक-संस्कृति का वाहक रहा है। आदिकालीन काव्य में जहां धार्मिक काव्य हो या रासो काव्य, लौकिक काव्य हो या गद्य साहित्य सभी में ऐतिहासिकता व लोक-संस्कृति के साथ राष्ट्रीय चेतना की भावना प्रलक्षित होती है। ऐसे ही भक्ति काल की निर्गुण व सगुण काव्य धारा हो या रीतिकाल की रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध या रीतिमुक्त काव्य धारा हो सभी काव्य धाराएं धार्मिक, सांस्कृतिक व राजनीतिक विरासत को संभाले हुए है।

आधुनिक काल में भी इसी परंपरा का निर्वाह करते हुए रचनाकारों ने अपने काव्य में हमारी भारतीय सांस्कृतिक विरासत को संरक्षण प्रदान किया है। इन्हीं आधुनिक समकालीन कवियों में प्रमुख रूप से अशोक बाजपेयी, केदारनाथ सिंह, अरुण कमल, धूमिल, रघुवीर सहाय, अनामिका, कुमार विश्वास, मलयज आदि कवियों का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है। ओमप्रकाश जोशी व करतार सिंह योगी ने अपनी पुस्तक 'राजस्थान की सांस्कृतिक विरासत में लिखा है कि- 'साहित्य लिखित अथवा मौखिक कैसा भी हो, इसका विकास मानव मन की अंतर्मुखी प्रवृत्तियों से हुआ है। हर युग में इसके द्वारा जन सामान्य के सामाजिक, धार्मिक एवं राजनीतिक जीवन के आदर्शों की रचना हुई है। इसकी आत्मा लोक मानस में सन्निहित है।'[1]

इन्हीं विचारों को अपने साहित्य में सम्मिलित करते हुए कुमार विश्वास ने भारतीय सांस्कृतिक चेतना, लोक-परंपरा, रामकथा व मानवीय मूल्यों को अपने काव्य का विषय बनाया और भारतीय सांस्कृतिक विरासत को संरक्षण प्रदान किया। उनके काव्य में भावनात्मक अभिव्यक्ति के साथ-साथ भारतीय संस्कृति का संरक्षण भी है। जैसा कि उन्होंने स्वयं कहा है कि-

'नई पीढ़ी को पुरखों से जोड़ना है अगर,
तो विरासत को बोझ नहीं, संवाद बनाना होगा।'

आज जहां वंदे मातरम जैसे राष्ट्रीय गीत पर प्रतिबंध लगाने की बात कुछ लोगों द्वारा उठाई गई तो कुमार विश्वास ने इसे अनुचित ठहराते हुए कहा कि- 'वंदे मातरम् पर लड़ रहे हैं कितने मूर्ख हैं हम'।[2] साथ ही उन्होंने कहा जब परतंत्र भारत ने इसका विरोध नहीं किया, तो आज स्वतंत्र भारत में लोग इसका विरोध करके क्या करना चाहते हैं।

भारतीय सभ्यता और भारतीय संस्कृति के प्रति कुमार विश्वास हमेशा से ही जागरूक रहे हैं। उन्होंने कहा है कि-

'राम तुम्हारे होने का बस इतना सा मतलब है,
धरती पर धर्म की फिर से जीत हो सकती है'

इस प्रकार राम-चरित्र के माध्यम से वह भारतीय धार्मिक संस्कृति में मानवीय नैतिक आदर्श की स्थापना पर बल देते हैं। उनका मानना है कि-

'जो समय के साथ ना बदले, वो जज़्बात नहीं होते,

जो जज़्बात बदल जाए, वो हालत नहीं होते।'

अर्थात् हमारी भावनाएं समय और अनुभव के साथ विकसित होती है, हमारी परिस्थितियां, हमारे हालात, भावनाओं के बदलने से नहीं बदलते।

उन्होंने भारतीय सांस्कृतिक मानवीय मूल्यों में स्थिरता तथा व्यक्तिगत अनुभव में गतिशीलता को स्वीकार किया है। कुमार विश्वास स्वयं कहते हैं कि–

'मैं हिंदुस्तान हूं, मुझे तुम तोड़ नहीं सकते,
मेरी मिट्टी में इतिहास बोलता है।'

अर्थात् मैं भारत का प्रतिनिधित्व करने वाला हूं। चाहे कितने ही राजनीतिक, सामाजिक, वैचारिक मतभेद हो मेरा अस्तित्व बना रहेगा। ये सभी मत मुझे तोड़ नहीं सकते। इस प्रकार यह भारत की मिट्टी, भारतीय लोक संस्कृति व ऐतिहासिक गौरव का बखान करने वाली है।

कुमार विश्वास की प्रसिद्धि का आधार 'कोई दीवाना कहता है' कविता की पंक्तियाँ–

'कोई दीवाना कहता है, कोई पागल समझता है,
मगर धरती की बेचैनी को सिर्फ बादल समझता है'[3]

भारतीय सामाजिक मूल्यों व सांस्कृतिक चेतना की ओर संकेत करती है।

ऐसे ही उनकी वर्तमान प्रसिद्ध कविता 'कन्हैया–कन्हैया' सांस्कृतिक व सामाजिक मूल्यों को अपने में संजोए हुए है। ये कविता भक्ति, प्रेम, आनंद, सांस्कृतिक चेतना व जीवन दर्शन का प्रतिबिंब है।

'सरेआम कौरव गजब ढा रहे हैं,
ये दुशासनों से बढे जा रहे हैं,
यूं कब तक तू चुपचाप देखेगा ये सब,
ओ लुटते हुए चीर के सुन बढैया,
कन्हैया–कन्हैया, कन्हैया–कन्हैया।'[4]

यहां उन्होंने महाभारत काल की उस विषम स्थिति की ओर इशारा किया है, जो आज भी हमारे मध्य एक असहनीय पीड़ा के रूप में प्रासंगिक है।

कुमार विश्वास की कविता 'वंश नहीं चलता कान्हा' से हमें संदेश मिलता है कि हमारी सच्ची सांस्कृतिक विरासत वंश नहीं बल्कि मूल्य और कर्म होते हैं, जो भारतीय संस्कृति का मूल आधार है। उन्होंने लिखा है–

'हर नील सपनों की हत्या का
दोष नहीं मिटता कान्हा
दंश भले चसके युग युग
पर इन विजयों का
सच पूछो तो
वंश नहीं चलता कान्हा'[5]

यहां श्री कृष्ण का वंश ना चलना से तात्पर्य यह है कि वे आज भी जीवित हैं, क्योंकि उनके विचार (पवित्र गीता), नीति और जीवन दर्शन हमारी संस्कृति में रचे बसे हैं।

जैसा कि डॉ.भीमराज पटेल ने अपनी पुस्तक 'राष्ट्रीय संस्कृति एवं संस्कार' में लिखा है कि– 'भारतीय संस्कृति एक त्यागशील संस्कृति है। भारतीय संस्कृति ने स्वार्थ हित लाभ और आत्म चिंतन से ऊपर उठकर सदैव पर कल्याण और परोपकार के विषय में ही सोचा है।'[6]

ऐसे ही राष्ट्रीय प्रेम से ओत–प्रोत कुमार विश्वास की कविता 'है नमन उनको' जिसमें उन्होंने राष्ट्रीय प्रेम और शहीदों के त्याग व बलिदान को अभिव्यक्त किया है। यह कविता जहां राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत है, वहीं हमारे ऐतिहासिक गौरव व पौराणिक गाथाओं की सत्यता को भी प्रकट करती है। उन्होंने राष्ट्रीय अमर शहीदों को नमन करते हुए लिखा है कि–

'है नमन उनको कि जो यशकाय को अमरत्व देकर,
इस जगत में शौर्य की जीवित कहानी हो गए हैं,
है नमन उनको कि जिनके सामने बौना हिमालय,
जो धरा पर गिर पड़े पर आसमानी हो गए हैं।'[7]

अर्थात् जो वीर इस धरती मां के लिए शहीद हो गए हैं, वह सिर्फ मृत्यु को नहीं प्राप्त हुए अपितु संसार में अमर हो चुके हैं, ऐसे वीर जवानों को हमारा नमन।

इसी तरह अपनी 'मद्यन्तिका' कविता में उन्होंने पौराणिक आख्यान का वर्णन कर नैतिकता को अपनाने की बात कही है। वह मद्यन्तिका से कहते हैं की–

'विद्वेष हलाहल पीकर अमृत छलकना
शिव वाली परंपरा को पहचाने देना।'[8]

अर्थात् जिस प्रकार शिव ने सृष्टि को बचाने व अमृत देने हेतु जहर पिया, तुम भी विद्वेष रूपी जहर को पीकर सभी को अमृत रूपी खुशी प्रदान करना।

ऐसे ही कुमार विश्वास की कविता 'जो आता है वो जाता है' में भी उन्होंने ऐतिहासिक पात्रों के साथ–साथ पौराणिक पात्रों को भी जीवित किया। जहां उन्होंने अपनी कविता में पौराणिक पात्र राम व कृष्ण का उल्लेख किया, वहीं उन्होंने प्रेम प्रसंग का आदिकथानक दुष्यंत कुमार व शकुन्तला को भी अपनी कविता में स्थान दिया। जहां उन्होंने चंद्रगुप्त व सम्राट अशोक की बात कही, वहीं उन्होंने गांधी, अंबेडकर, सुभाष चंद्र व भगत सिंह के बलिदान को भी अपनी कविता के माध्यम से मुखरित किया।[9]

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि कुमार विश्वास की कविताएं न केवल भावात्मक अभिव्यक्ति है, अपितु भारतीय सांस्कृतिक विरासत और संरक्षण का जीवंत दस्तावेज भी है। उनकी कविताओं में भावों के साथ–साथ भारतीय सांस्कृतिक चेतना, राष्ट्रीय प्रेम, धार्मिक, नैतिक मूल्यों की सशक्त अभिव्यक्ति हुई है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:–

1. जोशी, ओम प्रकाश, और करतार सिंह योगी, 'राजस्थान की सांस्कृतिक विरासत': महेंद्र बुक कंपनी, जयपुर : 2013 ई., पृष्ठ संख्या 73
2. एजेंडा आज तक : यूट्यूब चौनल, 2025 ई.
3. विश्वास, कुमार, 'कोई दीवाना कहता है' : वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली : 2023 ई., पृष्ठ संख्या 113
4. विश्वास, कुमार, 'कन्हैया कन्हैया': यूट्यूब चौनल (कुमार विश्वास), 2024 ई.
5. विश्वास, कुमार, 'वंश नहीं चलता': 'फिर मेरी याद' काव्य संग्रह, 2024 ई., पृष्ठ संख्या 59
6. पटेल, भीमराज, 'राष्ट्रीय संस्कृति एवं संस्कार' : मोनिका पब्लिकेशन, जयपुर : 2016 ई., पृष्ठ संख्या 134
7. विश्वास, कुमार, 'है नमन उनको' : 'कोई दीवाना कहता है' काव्य संग्रह, 2019 ई., पृष्ठ संख्या 99
8. विश्वास, कुमार, 'मद्यन्तिका (मेहंदी)' : 'कोई दीवाना कहता है' काव्य संग्रह, 2019 ई., पृष्ठ संख्या 98
9. विश्वास, कुमार, 'जो आता है वो जाता है' : यूट्यूब चौनल (कुमार विश्वास), 2019 ई.